कुमार जीवन - 33

अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ **कुमारों के साथ अलग-अलग ग्रुप से गॉडली यूथ ग्रुप** - लौकिक रीति से वह यूथ ग्रुप अपनी-अपनी बुद्धि अनुसार कार्य कर रहे हैं लेकिन उन्हों का कार्य नुकसान करना है। आप लोगों का काम है स्थापना के कार्य में सदा सहयोगी बनना। कभी कोई भी कारण वा विघ्न आये तो उसका निवारण सहज कर सकते हो? कुमार ग्रुप में बापदादा की सदा उम्मीदें रहती हैं। इतने यूथ हिम्मत और उमंग रख सदा के विजयी बन जाएं तो विश्व में विजय का झण्डा उठाकर सारे विश्व में घूमें। सदा उड़ती कला में जा रहे हो, कोई रुकती कला वाला तो नहीं है। यूथ ग्रुप अर्थात् सदा शक्तिशाली सेवा करने वाले। यूथ जो चाहे वह कर सकते हैं। वह विनाशकारी और आप स्थापना के कार्य वाले। वे अशान्ति मचाने वाले और आप शान्त स्वरूप हो। शान्ति फैलाने वाले हो। कुमारों के लिए तो बहुत तैयारी कर रहे हैं।

➳ _ ➳ ऐसे पक्के कुमार हों जो कभी हलचल में न आवें। **ऐसे नहीं, यहाँ नाम बाला हो और फिर वहाँ पुरानी दुनिया में चले जाएं।** कई कुमार पहले बहुत उमंग उत्साह से सेवा में चलते फिर थोड़ा भी टक्कर हुआ तो पुरानी दुनिया में चले जाते। **छोड़ी हुई चीज़ फिर से जाकर लें तो अच्छा लगता है!** आप सबने भी पुरानी दुनिया छोड़ दी है ना! अगर कोई रस्सी बंधी होगी तो हिलते रहेंगे।

➳ _ ➳ तो सदा अपने को "गॉडली यूथ ग्रुप" समझो। इतने सब कुमार रिफ्रेश होकर खज़ानों से भरपूर होकर जायेंगे तो देखने वाले कहेंगे यह "देवात्मा" बनकर आ गये। ऐसा कोई कमाल का प्लैन बनाओ। यूथ को देखकर गवर्मेन्ट भी घबराती है। गवर्मेन्ट को भी रास्ता दिखाने के निमित्त आप लोग बनेंगे। कुमारों को सदा सेवा के शक्तिशाली प्लैन बनाने चाहिए। परन्तु **याद और सेवा का सदा बैलेन्स रहे।**

➳ _ ➳ अच्छा - सदा निर्विघ्न रहने की गुडमार्निंग जब होगी तो निर्विघ्न होंगे ना! जब सतयुग गुडमार्निंग होगा तो निर्विघ्न होंगे। अभी निर्विघ्न बनने की गुडमार्निंग। शुभ दिन कहते हैं ना। शुभ प्रात: कहते हैं तो शुभ प्रात: अर्थात् जिसमें अशुभ कुछ नहीं। आप सबकी सदा ही शुभ प्रात: है। शुभ दिन है और शुभ रात्रि है। तो सदा निर्विघ्न अर्थात् शुभ। इसलिए निर्विघ्न भव की गुडमार्निंग। अच्छा –

➳ _ ➳ **विदाई के समय :-** सतगुरु की कृपा आपका वर्सा बन गया। इसलिए **कृपा करो, यह संकल्प करने किी भी आवश्यकता नहीं। हो ही वृक्षपति के बच्चे।** तो बृहस्पति की दशा, गुरु की कृपा सब स्वत: ही प्राप्त है। मांगने की आवश्यकता ही नहीं। मांगने से छूट गए, संकल्प करने से भी छुड़ा दिया। अभी मांगने का कुछ रहा है क्या! बाप के भी सिर के ताज हो गये। वह माँगेगा क्या! तो वृक्षपति दिवस की, बृहस्पति के दशा की सदा ही बच्चों को बधाई सहित याद-प्यार।

(07-05-1983)

➢➢ सबसे बड़ी सेवा क्या है ?

➳ _ ➳ स्वयं को शांत कर देना

➳ _ ➳ स्वयं के भावो को शुद्ध का देना

➳ _ ➳ स्वयं के चित को स्थिर कर देना

➳ _ ➳ मन को शून्य का देना

→ और इसी शून्य के मंदिर में परमात्मा का अवतरण होता है

➢➢ बाहरी दुनिया और आत्मिक दुनिया में अंतर

➳ _ ➳ वह इन्द्रियों की दुनिया है

→ यह आत्मा की दुनिया है

➳ _ ➳ वह दुनिया भोग और विलास की है

→ यह दुनिया वैराग की है

➳ _ ➳ उस दुनिया में बाह्यगमन है

→ इस दुनिया में अंतर्गमन है

➳ _ ➳ वह दुनिया दोडाती है

→ इस दुनिया में अदोड है ... आराम है...

➳ _ ➳ वह दुनिया विकारों की दुनिया है

→ यह दुनिया इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करने की दुनिया है

➳ _ ➳ वह दुनिया क्षणिक सुखो की और ले जाती है

→ यह दुनिया अतीन्द्रिय अविनाशी सुख का अनुभव कराती है